जय श्रीमन्नारायण

समता मूर्ती स्फूर्ति केंद्र में आप सबका हार्दिक स्वागत् !

STATUE OF EQUALITY®

समता मूर्ती - भगवद् रामानुजाचार्य स्वामीजी महराज

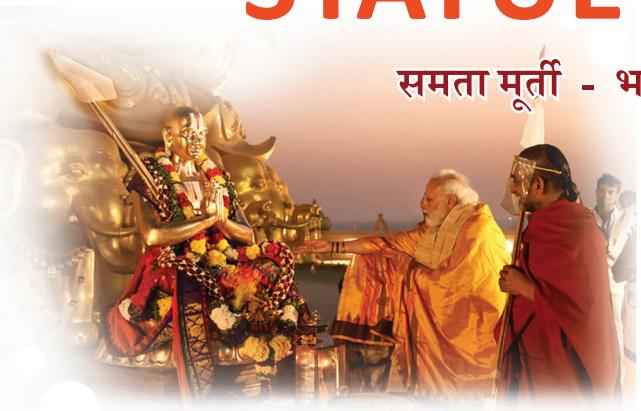

परम पूज्य श्री चिन्नजीयर स्वामीजी महाराज के संकल्प से विकसित, वसंतपंचमी, 05-02-2022 को 216 ft. पंचधातु मूर्ति के रूप में आविष्कृत भारत के प्रधान मंत्री, मान्यमहोदय श्रीमान् नरेंद्र मोदी जी के कर कमल से लोकार्पित...

भगवद् रामानुजाचार्य स्वामीजी महराज का समतासंदेश
आज भी सचेत एवं अनुसरणीय है, और पीढ़ी दर पीढ़ी प्रेरणादायक रहा है....

संत श्री रामानुजाचार्य स्वामीजी महराज मानते थे कि -

"दूसरों के उद्धार के लिए यदि आवश्यक पडे तो मैं नरक जाने के लिए भी तैयार हूँ
सभी लोगों को मंदिर में प्रवेश का और नाम जपने का अधिकार है।
भगवान की दृष्टि में सब प्राणी समान हैं।"

भगवद् रामानुजाचार्य स्वामी अद्वितीय ज्ञान के भण्डार हैं। उनके ज्ञान की असीम धारा आजकल के समानता की विचारधारओं को पीछे करके, उनसे हटकर आज भी अत्यंत शोभायमान है।

केशव सोमयाजी, कांतिमती के पुत्र रामानुजाचार्य स्वामी का जन्म सन् 1017 में दक्षिण भारत के श्रीपेरुम्बुदूर में हुआ था। अपने 120 वर्ष के जीवनकाल में उन्होंने पूरे भारतवर्ष का भ्रमण किया, सभी वर्गों के लोगों को जाना, प्रत्येक व्यक्ति के आवश्यकताओं पर अपना प्रकाश डाला।

रामानुजाचार्य स्वामी ने पाँच प्रमुख गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की –

1. संत महापूर्ण जी से – तिरुमंत्र – अर्थात् अष्टाक्षरी-नारायण मंत्र
2. संत गोष्ठीपूर्ण जी से – मंत्रों के सार, एवं भगवद्गीता
3. संत श्रीशैलपूर्ण जी से – श्री रामायण - 18 विशेषार्थ
4. संत मालाधरार्य पेरुमाल अरयर जी से – दिव्य प्रबन्ध
5. संत श्रीवररंगाचार्य जी से – दिव्य प्रबन्ध सार

इन पाँचों गुरुओं ने अपने आचार्य संत यामुनाचार्य जी की आशा से रामानुज स्वामी के सहज स्वरूप को जगाकर विश्व कल्याण कारक बनाए।

अपने 120 वर्ष के जीवन काल में वैदिक परम्पराओं को मान्यता देते हुए धार्मिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर अनेकों लोगों को पिरोकर, उनका उद्धार किया।

उनके जीवन के कुछ महान विशेषताएँ इस प्रकार हैं –

* संत श्री यामुनाचार्य स्वामी जी ने प्रकट किया, जिन्हें हम आलवन्दार नाम से भी जानते हैं "भविष्य में श्रीवैष्णव संप्रदाय की ज्योति को जगाये रखने वाले केवल श्रीरामानुज स्वामी ही है।" वे रामानुज को अपने पास बुलावा भेजे, परन्तु रामानुज स्वामी के वहाँ पहुँचने के पहले ही यामुनाचार्य स्वामी अपने शरीर को त्याग चुके थे। रामानुजाचार्य स्वामी ने जब स्वामी यामुनाचार्य के पार्थिव शरीर को देखा, तब उनकी तीन उँगलियाँ मुडी हुई थी। श्री रामानुजाचार्य जी ने अपने आचार्य के हृदय को जानते हुए, जैसे ही तीन प्रतिज्ञा की, तुरन्त उनकी उँगलियाँ खुल गई। लोग चकित् हो गये थे। श्री रामानुजाचार्य अपना जीवन काल में उन तीनों को साकार दिया।

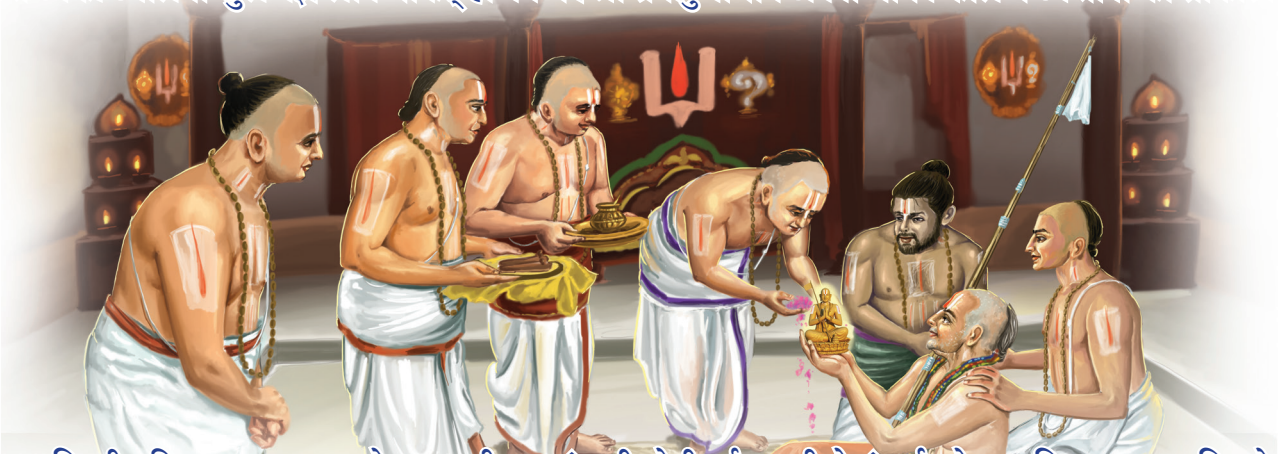

* 200 कि.मी. की हर बार यात्रा करते हुए 18वी बार संत श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामी से मंत्रार्थ को प्राप्त किया, तुरन्त मन्दिर के शिखर पर चढ़कर उस पवित्र मंत्रार्थ को योग्य के सम्मुख उच्च स्वर में बाँट दिया। गुरूजी इस बात से नाराज हुए और नरक में गिरने का श्राप दिया। श्री रामानुजाचार्य ने जवाब दिया कि संसार का उद्धार इस मंत्र से होना है और उसको देने से यदि नरक ही फल है तो वह भी मुझे स्वीकार है। सुनकर गुरू द्रवित होगए, और कहा कि "आप हम से भी बडे हैं" तमिल भाषा में इसी बात पर उनका नाम बना "एम् पेरुम् आनार्"।

संत श्री रामानुजाचार्य स्वामी की भलाई चाहने वालों में वैश्य वर्ग के एक संत श्री कांचीपूर्ण स्वामी जी प्रमुख थे। उन दिनों में ब्राह्मण किसी दूसरे शाखा के लोगों से आध्यात्मिक या वैदिक कृत्यों को जानना सख्थ मना था। परन्तु रामानुजाचार्य जी जानते थे कि शास्त्रों में जन्म को नहीं परन्तु ज्ञान को प्रधानता दी गई। कांचीपूर्ण स्वामी जैसे महान ज्ञानियों से तत्वार्थ को ग्रहण करते थे, और उन जैसे महान् को अपना आचार्य मानते थे।

श्री रामानुजाचार्य स्वामी जी बहुमुखी प्रतिभावान् थे। समता के अद्वितीय प्रतिमा थे, हैं और रहेंगे

* दलित, ताड़ित, पीड़ित लोगों के अंधकारमय जीवन में उन्होंने मन्दिर के द्वार खोलकर आनंद की ज्योति जलाई।
* उन्हें पंचसंस्कार प्रदान करके मंत्रोपदेश से वैष्णव जन्म दिलवाए।

उनके समय में राज्य का शासन मन्दिरों द्वारा ही चलता था। समाज के एक वर्ग के लोगों द्वारा ही शासन को नियन्त्रित किया जाता था। रामानुजाचार्य स्वामी जी ने पचास प्रतिशत सेवाओं को समाज के अन्य वर्ग एवं दलित लोगों के लिए भी आरक्षित कर दिया।

समाज को सुधारते हुए श्री रामानुजाचार्य स्वामी जी

* पढ़े लिखे एवं अनपढ़ लोगों के बीच में सेतुबंधन करके मिलकर रहने का सन्देश दिया।
* विश्व में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की स्थापना की।
* समाज के सभी मतावलम्बियों के प्रति सहिष्णुता की भावना को उजागर किया।
* एक मुसलमान कन्या होने के बावजूद भी बीबीनाँचार की असीम भक्ति के कारण उन्ही को महालक्ष्मी जी का स्थान सौंपा।

एक आध्यात्मिक उद्यमकारी के रूप में श्री रामानुजाचार्य स्वामी जी

* वैदिक साहित्य - संपत्ति को सामान्य मानव तक पहुँचाया।
* "विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त" की रूपरेखा की रचना किए।
* भक्तिमार्ग के मूलस्त्रोत बने।
* कबीरदास, रामानंद, निम्बार्क, नरसिंहदास मेहता, मीराबाई, अन्नमाचार्य, भक्त रामदास, त्यागराज जैसे महान् संतों के लिए प्रेरणा बने।

श्री रामानुजाचार्य के वैदिक सिद्धान्त की विशेषताएँ

* विश्व में केवल तीन ही सत्य हैं –

  1. प्रकृति, 2. जीव और 3. परमात्मा

* तीनों सत्य भ्रमात्मक नहीं है, वास्तविक है।
* समस्त विश्व के चेतन, अचेतन प्राणी, वस्तु सभी उस परमात्मा से ही उत्पन्न हुए हैं, और उसी परमात्मा के शारीरिक अंग हैं।
* प्रमुख उद्देश्य - "प्राणी मात्र की सेवा में ही परमात्मा की सेवा" समझकर जीवन चलाए और प्रसार किए।

श्री रामानुजाचार्य जी वेदधर्म के आधार स्तंभ -

सभी लोगों की रक्षा हेतु श्री रामानुजाचार्य स्वामी ने वेदों के सार को 9 ग्रन्थों के रूप में प्रकट किया।

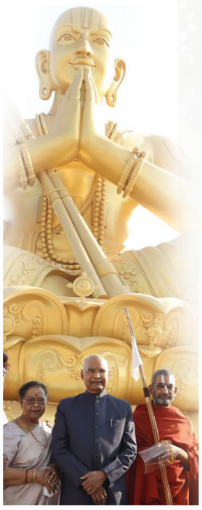

1. श्री भाष्यम् – ब्रह्मसूत्रों का विस्तार
2. वेदार्थ संग्रह – उपनिषद् सार
3. वेदान्त दीप – ब्रह्मसूत्रों का सार
4. वेदान्त सार – ब्रह्मसूत्रों के शब्दार्थ
5. गीता भाष्यम् – भगवद्गीता का व्याख्यान
6. नित्य ग्रन्थ - मठ में भगवान् की आराधना करने की पद्धति
7. शरणागति गद्य – शरणागति के विधि विधान बताए
8. श्रीरंग गद्य – शरण करने के योग्य स्थान को दिखाया
9. वैकुण्ठ गद्य – वैकुण्ठ धाम का वर्णन

रामानुजाचार्य स्वामी की सरलता, प्रेम, पवित्रता ने अनेकों लोगों को उनकी शिष्य परम्परा में शामिल किया। राजा, महाराजा, सामान्य से अति सामान्य भी उनके शिष्य बने, और उनके बताए मार्ग पर चलते हुए भक्ति एवं प्रेम का प्रसार किए।

अत्यंत महत्त्वपूर्ण संख्या '9' : -

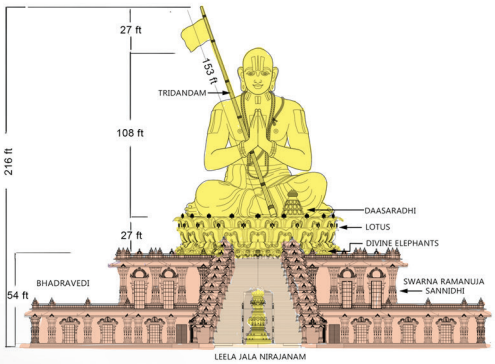

* संख्या '9' रामानुजाचार्य के सिद्धान्त की संख्या है – उन के विचारों की संख्या है।

कारण क्या है? संख्या '9' में महान् आचार्यों के गुण निक्षिप्त है। कैसे?

'9' संख्या से किसी भी संख्या को मिलाने पर, उस संख्या के मूल्य को बढ़ाकर, '9' संख्या मिट जाती है। उदाहरण के लिए –

9 + 1 = 10, दस से जब किसी अन्य संख्या को जोडेंगे तो '1' के मूल्य को बढा कर, 9 संख्यां लुप्त हो जायेगा।

9 + 2 = 11, 9 + 5 = 14, शून्य को छोड़कर किसी भी संख्या को 9 से जोडेंगे तो, '9' एक तरफ हट जाएगा।

रामानुजाचार्य स्वामी जी भी '9' संख्या की तरह हैं – नरक जाने के लिए भी सन्नद्ध होकर, सभी को मंत्र का उपदेश किए।

तो आइए "समता मूर्ति स्फूर्ति केन्द्र" में '9' संख्या की तरह त्याग एवं परोपकार की भावना को जगाएंगे।

श्री रामानुजाचार्य स्वामी पर आळ्वार के प्रभाव

आळ्वार सन्त भगवान् के भक्ति-गुणसागर में पूर्ण रूप से डूबकर 4000 पवित्र गीतों को तमिल में गाकर परमात्मा की सेवा किए। सन्त आळ्वारों ने समाज के भिन्न-भिन्न शाखाओं, वर्गों में जन्म लेकर भी केवल परमात्मा के गुणों का गान किया। श्री वैष्णव मन्दिरों में इन प्रबन्धगीतों को श्रद्धापूर्वक गाया जाता हैं। श्री रामानुजाचार्य स्वामी जी, आळ्वारों के भक्ति से अत्यन्त प्रभावित हुए थे। परमात्मा ने विग्रह रूप में अपने समानता गुण को जहाँ जहाँ फैलाया, वहाँ-वहाँ रामानुजाचार्य पदार्पण किए और आळ्वारों द्वारा रचित गीतों के गान को प्रधानता दिए। इस प्रकार 108 दिव्यदेशों को इस पावन भारत भूमि एवं नेपाल में भी दर्शन कर सकते हैं।

आश्चर्य ! "समतामूर्ति स्फूर्ति केन्द्र" में 108 दिव्य देशों के दर्शन, आशीर्वाद ग्रहण करने का एक अद्भुत मौका हमारे लिए ही है – तो आइए आळ्वारों के पवित्र गीतों के गान से प्रेरित 108 दिव्य देशों का दर्शन करेंगे।

अपनी महानता के कारण 216 फीट ऊँची श्री रामानुज स्वामी की दिव्य मूर्ति के दर्शन से हम भी महान् एवं परोपकारी बनने की प्रेरणा को पाएंगे।

ऐसे आनंदमय दर्शन को पाकर,
आचार्य के मार्ग को अपनाकर,
आचार्य की कृपा के पात्र बनेंगे।
"समानता" की विशिष्टता को जानकर,
अपने जीवन को उन्नत बनाएँगे।
जय श्रीमन्नारायण !

Email:- contact@statueofequality.org

Visit us:- www.chinnajeeyar.org

Facebook Twitter Youtube